राज कॉमिक्स विशेषांक

मूल्य 15.00 संख्या 15

गोजी

इस कॉमिक्स के साथ आकेलाल का एक मोनेट स्टीकर मुफ्त

ALFA INVESTMENTS

लेखक : तरुण कुमार वाही
सम्पादक : सन्तोष चन्द्र गुप्त

कलानिर्देशक: प्रताप मुल्लीक

(चित्र: संदेश)

Udaram ... Purani Abadi
SRI GANGANAGAR-335001

जोजो

1012
2
GOYAL

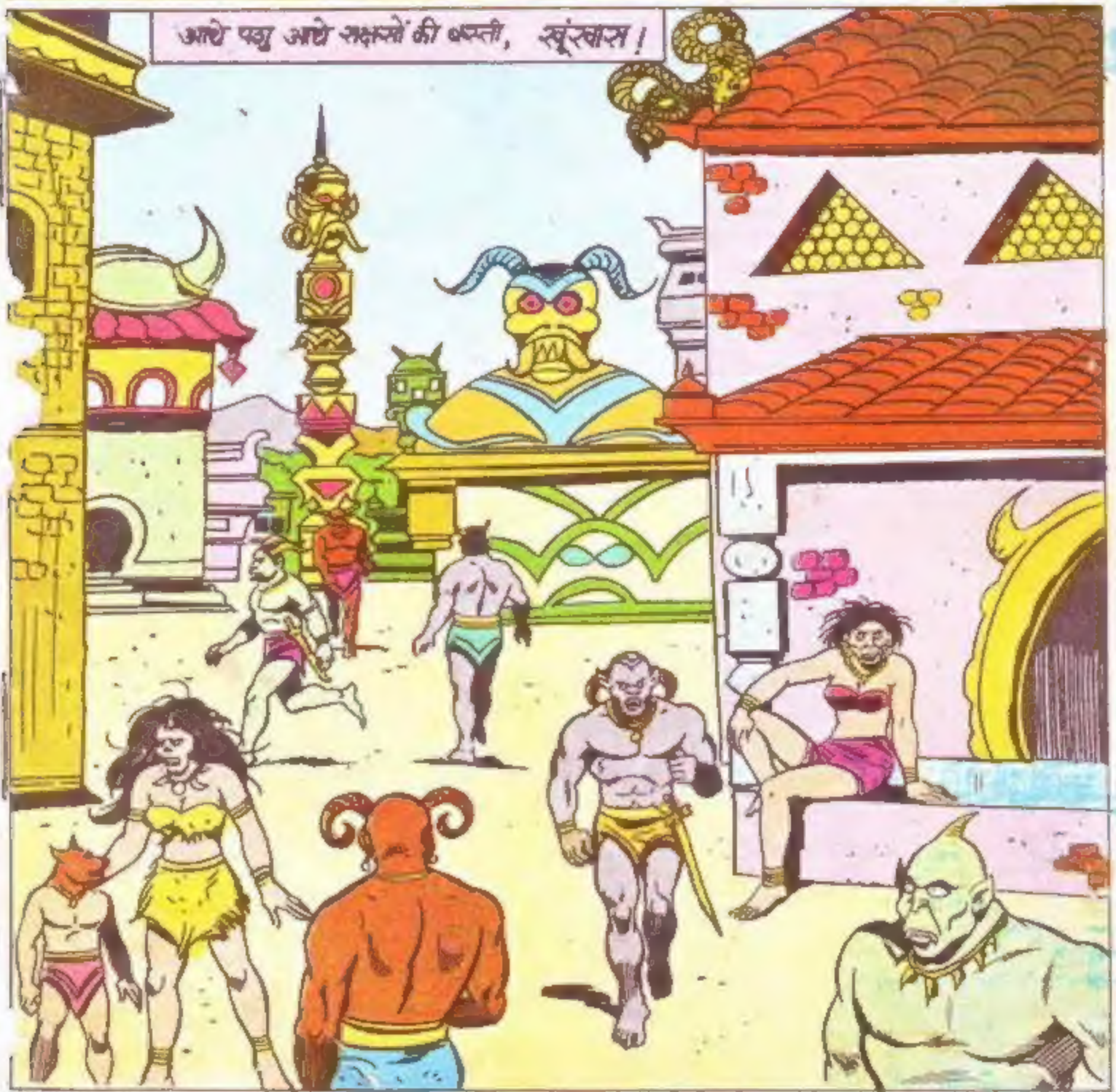

© RAJA POCKET BOOKS

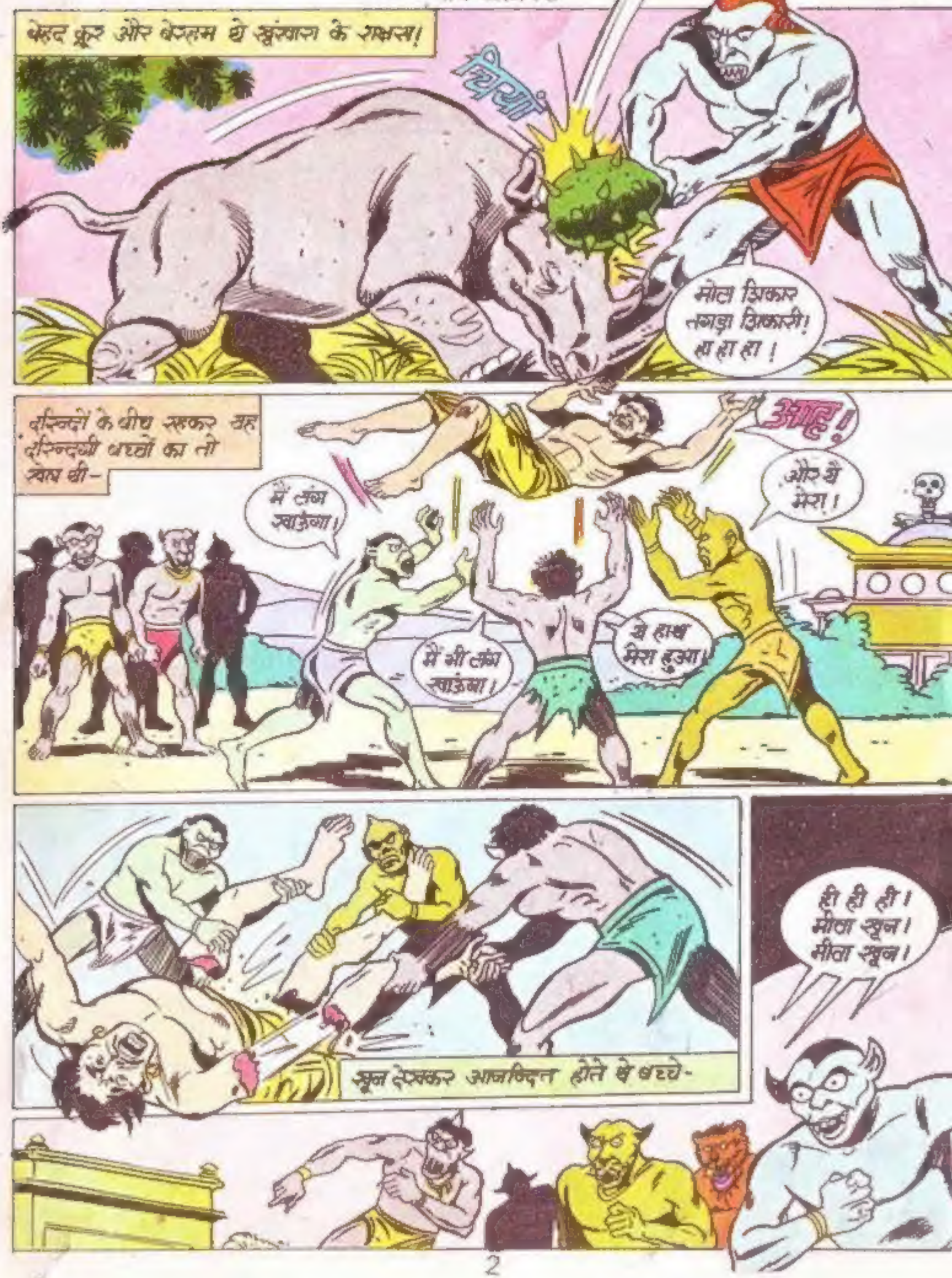
बेहद क्रूर और बेरहम थे सुरंगाल के राक्षस!
धिच्चां
मोटा ऊंकार तगड़ा ऊंकारी! हा हा हा!
दरिन्दों के बीच रहकर वह दरिन्दगी बच्चों का तो खास थी-
ओह!
और ये मेरा!
मैं तुझे खाऊंगा!
मैं भी तुझे खाऊंगा!
ये हाथ मेरा हुआ!
ही ही ही! मीता खून। मीता खून।
खून देखकर आनन्दित होते वे बच्चे-

सूंस्वाऽ ! सूंस्वाऽ का सम्राट ! अति घमंडाग्नी !
पानी की तरह पीता था खून ! और अपने
सींगों का चुकीमापत्व बरकरार रखने के लिए
वह कुछ इस प्रकार के खौफनाक व्यायाम
भी किया करता था -

राक्षसों के ही एक अन्य राज्य वज्रा...
...का महाचांडाल राक्षस, सम्राट वज्र !
संपूर्ण राक्षस - लोक पर होगा केवल वज्र का अधिकार।
एक अन्य राक्षस राज करता पर विजय के बाद -
इस बार मेरा शिकार होगा सूर्यलता।
अपनी विशाल सेना को साथ लेकर वज्र चल पड़ा सूर्यलता की ओर -
हरिक नीप के रहते कोई मेरा और मेरी सेना का बाल भी बांका नहीं कर सकता।

सुरंगल में इस समाचार से खलबली मच गई -

क्या? राक्षस सम्राट वज्र सूरंगार पर आक्रमण करने वाला है?

वज्र! जिसके पास है अपराजित शक्ति शस्त्रास्त्र!

सूरंगार की आंखों में खौफ का अतिक्रोध!

वज्रमुख का राक्षस वज्र!

अतिक्रोध में सम्राट सूरंगार की पुतलियां नेत्र पलक में जा छिपती हैं।

राक्षसों के महाबुरु पक्षक ने यह मनहूस समाचार दिया था सम्राट सूरंगार को -

सूरंगार की रक्षा के लिये अभी से कदम उठाना होगा सूरंगार सम्राट!

महाबुरु पक्षक! वज्र अपनी सेना के साथ यहां आयेगा तो सही, किन्तु वापस नहीं जायेगा।

पक्षक चिन्तन मग्न था -

इस आत्म विश्वास का कारण सूरंगार सम्राट?

वज्र ने खूंखार की प्रकृति को कम आंका है महाबुरु पक्षक!
मैं उसे बताऊंगा कि खूंखार से टकराकर उसने अपने जीवन की सबसे बड़ी भूल की है।
क्रोध में युद्ध नहीं लड़ा जाता खूंखार सम्राट! क्योंकि क्रोध युद्ध के दांव-पेंच भूल देता है।
वज्र यूं ही नहीं निकल पड़ा है अक्षलोक का नायक बनने को। हीरक है उसके पास।
हीरक?
हीरक के रहते इस युद्ध में तुम्हारी जीत असम्भव है खूंखार सम्राट! असम्भव।
उसका एक भी सैनिक नहीं पीट पाएगा तुम और वो कल्पे आम मच्छ देव खूंखार में।

समय व्यर्थ न करो सम्राट सूरंसार! वज्र को यहां पहुंचने में अभी कुछ समय लगेगा।
तब तक तुम हीरक से बड़ी कोई शक्ति हासिल करो।
हीरक से बड़ी शक्ति?

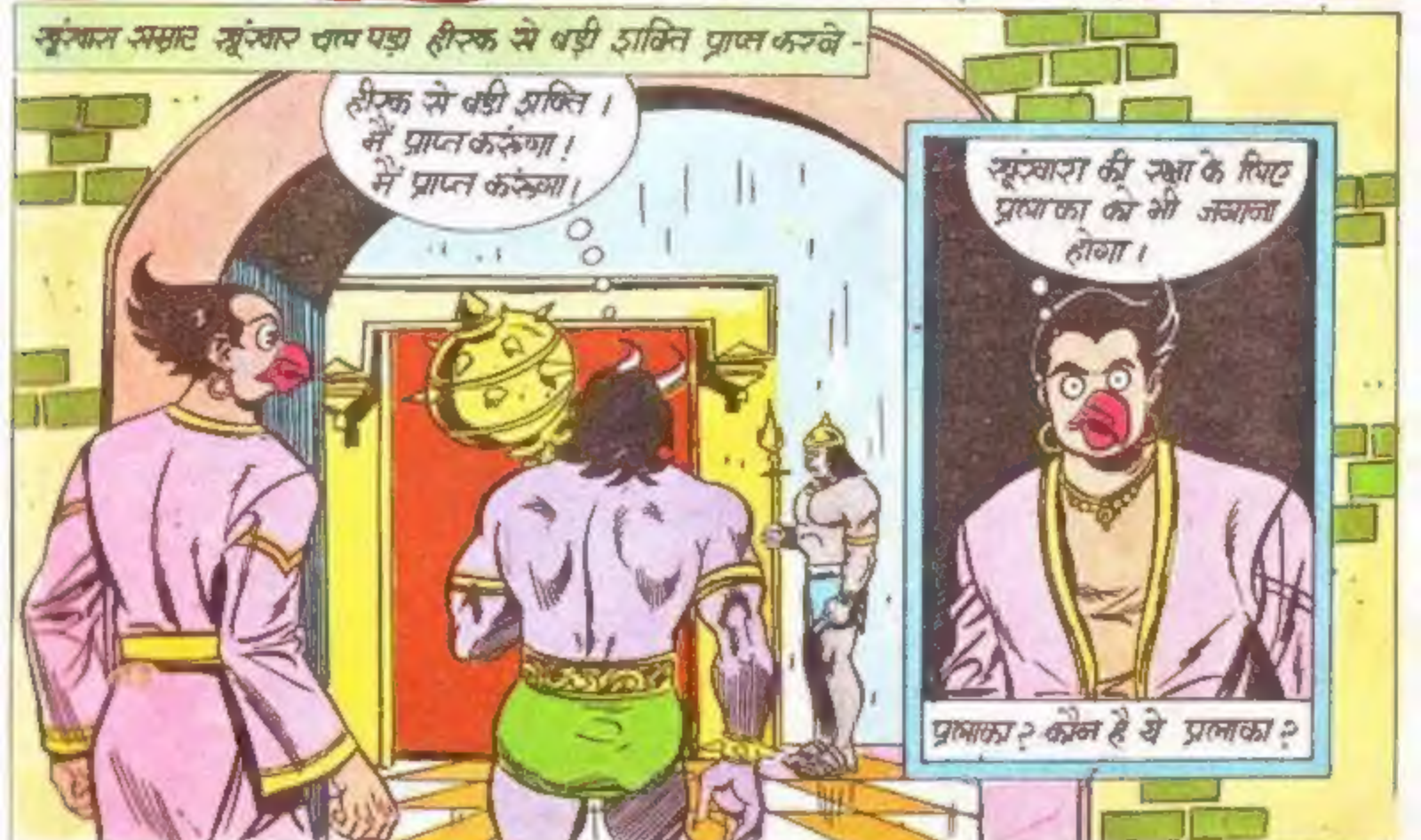
सूरंसार सम्राट सूरंसार चल पड़ा हीरक से बड़ी शक्ति प्राप्त करने -
हीरक से बड़ी शक्ति। मैं प्राप्त करूंगा! मैं प्राप्त करूंगा।
सूरंसारा की रक्षा के लिए प्रलाका को भी जलाना होगा।
प्रलाका? कौन है ये प्रलाका?

पृथ्वी! स्थान नक्षत्रमाप!

मकोड़ा ग्रह से राक्षस मौत पृथ्वी की ओर बढ़ रही थी –

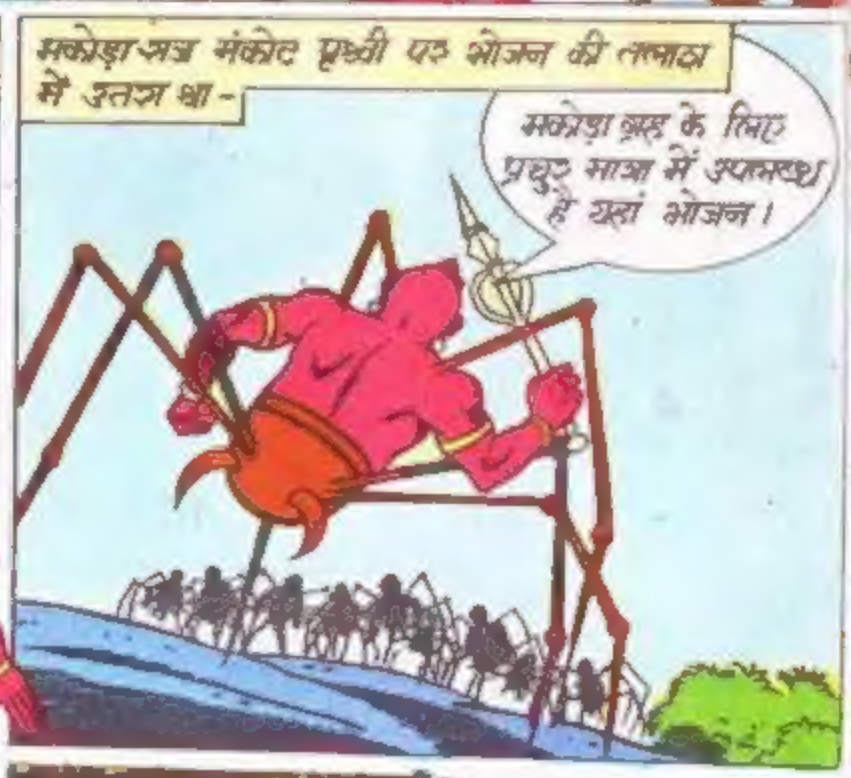
मकोड़ा अब मंकोट पृथ्वी पर भोजन की तलाश में उतरा था –
मकोड़ा ग्रह के लिए प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है यहां भोजन।

पृथ्वी पर मानव थे उनके भोजन –
भोजन!
भोजन!
भोजन!

पड़ोसन चाची भय से कांप उठे -
मकोड़ा राक्षस !
उफ़ ! फिर आ गए ये दैत्य !

भाग पड़े लोग अपने प्राण बचाने के लिए -
भागो
मकोड़ा राक्षस आ जाएंगे !

देखते ही देखते पूरे नगर में फैल गए मकोड़ा राक्षस -
भोजन
भोजन

भोजन हा हा हा !
भोजन हा हा हा !
आह !

मकोड़ा राज, मंकोट !
बचाओ
सब पेट भरकर भोजन कर लें फिर कोई भूखा नहीं जाएगा हा हा हा !

मंकोट अपने सैनिकों के साथ वापस उड़ गया मकोड़ा दुर्ग की ओर -

इस प्रकार से इस नगर का विनाश हो गया।
नगर में एक चिंगारी का बचा तक भी जीवित नहीं बचा था।
सूरंगा असुर सूरंगा कहां गए हो तुम।
सूरंगा की रक्षा के लिए सूरंगा स्वयं अपने प्राण की भेंट तुझे अर्पित करता है महान देवता मुंकार।
और इसीके साथ..
..वहीं था सूरंगा। हिम जहां सूरंगास की धरती।
धड़ाके
ओह! यह क्या?
लगता है वज्र ने सूरंगास पर आक्रमण कर दिया है।

...का मुकाम प्रकट हो गए –
वत्स सूरसेन! कैसे याद किया?
सूरसेन का अभिन्न संकट में है मुकाम। प्रेतात्मा वज्र ने सूरसेन पर चढ़ाई कर दी है। और इसके पास है एक अभिजित अग्नि हथियार!
सूरसेन की प्रभा के लिए मुझे इससे भी बड़ी कोई अग्नि दो देवता मुकाम!
...का मुकाम। प्रणाम स्वीकार करो!
...की अग्नि का कमाल था सूरसेन ... वज्र ने खुद को बंदी हो गया।
तुम्हारे तपस्या के फलके रूप में ये शक्ति तो हम तुम्हें देंगे ही, वत्स। किन्तु
किन्तु क्या मुकाम?
तुम्हें वचन देना होगा कि इस अग्नि का दुरुपयोग नहीं करोगे।
??
मैं वचन देता हूं मुकाम। इस अग्नि का दुरुपयोग नहीं करूंगा।

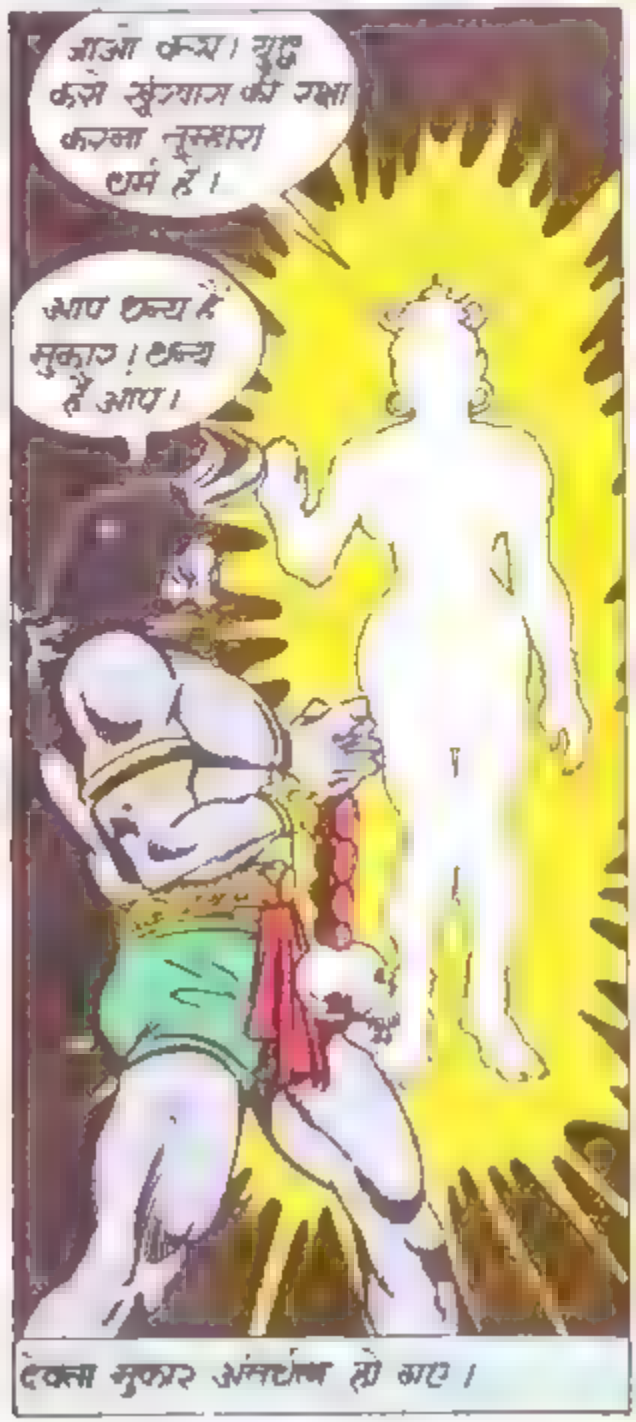

दक्ता मुकाल अंतर्धान हो गए ।

मधुक पक्षक के नेतृत्व में सूत्राज के सैनिकों ने किया वज्र का आनन्दात स्वागत -
आक्रमण!
हा हा हा
हा हा
आक्रमण।
हा हा हा हा हा हा।
हम तुम्हारे आक्रमण का
स्वागत अवश्य देंगे, किन्तु
तुम्हारे आक्रमण के
पश्चात। हा हा हा!

महा भयंकर आक्रमण किया सूरसेन के सदस्यों ने वज्रेश पर -
तुझे पाताल में पुश्या दूंगा प्रेमाल।
हा हा हा हो
इस पर मेरे महा भयंकर वार का भी कोई असर नहीं हुआ।
मेरे दो टुकड़े कर दूंगा।
दो टुकड़े -
हा हा हा। एक प्रहार और करेंगे। हा हा हा।
महा घोंघाल वज्र लक्ष्मी के मारे दहशत हुआ जा रहा था -
हा हा हा। हम पर आक्रमण का परिणाम देखा महा मूर्ख पक्ष।
हाय
धड़ाम

अगले सूरजास्त समाप्त सूरजास्त
शीघ्र ही कोई बड़ी घटना घटेगी
घटना नहीं अनर्थ हो जायेगा।
वह प्रातः मच्छले का निश्चय कल्क आज था -
हा हा हा। अब मेरी बारी है। आक्रमण का आदेश दूंगा।
महा भयानक आक्रमण था -
आक्रमण
धड़ाधड़
आह!
आई

सूरजगढ़ की जड़ें हिलने लगीं।
चलने लगी उनके रक्त की नदी –
दानव का कलश भी ले
हा हा हा। नरक
जिन्दाबाद। पृथ्वी
जिन्दाबाद।
अचानक पहले की तरह पृथ्वी से
उठी
अरे! अरुण प्रताप मारा
गया तो क्या अजय पुत्र भी
सूरजगढ़ आया है।
अरुण प्रताप को पुनर्जन्म दे
उसकी मौत अब निश्चित है।
नहीं पुनर्जन्म तो सूरजगढ़ की
हार.... उफ़ - क्या करूं मैं ?
अरुण प्रताप को इस
युद्ध से पृथक्‌ न किया
गया तो निश्चित ही
यह पराजय होगी

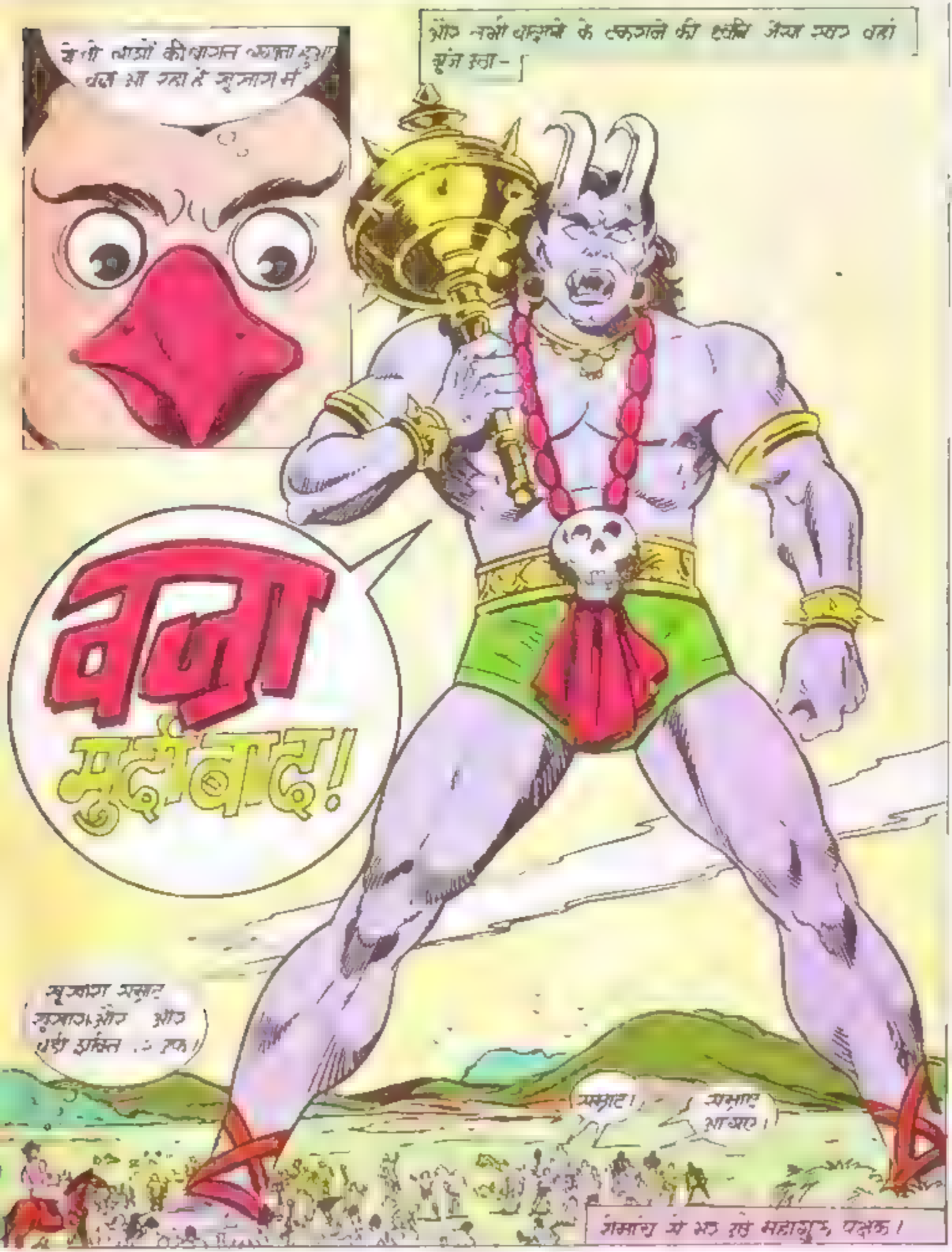
ये तो लाखों की भाषा समझता है, वह भी रहा है मुझसे मन में
और नर्भा बहुमत के एकतरफा की ऐसी जैसा स्वर वहां गूंज रहा –
बड़ा मुर्दाबाद!
सूअरों सम्राट सूअरों और और यही उनका ...ा रूप!
सम्राट!
सम्राट आ रहे!
समाचार से भर रहे महाकुंभ पंडाल।

पूरी नगर में चौंक पड़ा महाचांडाल वज्र भी —
यह तो बड़ी अग्नि है। हीरक में भी बड़ी अग्नि सामर्थ्य कर भाता सूरसाग समाए!
महाचांडाल वज्र। इस बड़ी अग्नि शक्तियों के भाग लेगे किसकी धर्मेगी?
सूरसाग के सरसों की खेतों और नदी की नगह बहना उसका सून देखकर पसाद हो गया सूरसाग समाए सूरसाग-
तुझे इनके खून की असुन बड़ी कीमत चुकानी होगी महाचांडाल वज्र।
बड़ी अग्नि में नहीं बल्कि तू और तेरी सेना।
इस सूरक ने क्या महाचांडाल वज्र का-
हीरक अग्नि को पीट कर रख देगी इसकी बड़ी अग्नि। उफ!

अब देर न करो सूंस्राग्र सम्राट! वत्सु स्थान छल गया है सूंस्राग्र की पत्नी पर सूंस्राग्रों का।

सूंस्राग्र की बड़ी प्रतिमा का महा-महा-महा भयंकर प्रहार था वो। बच न सके वज्रा के राक्षस।

राक्षस

बड़ी प्रतिमा का वार। महाबल! सूंस्राग्र आ गया था हमारी पर।

महाचाकाम वज्र की आधी सेना सुल्तान के एक ही वार से धराशायी हो चुकी थी -

अरे! अब मैं यहां खड़ा रहा तो मारा जाऊंगा।

सुल्तान की सेना अन्तर्धान होकर दूर पहुंच चुके थे -

खत्म कर दो। मार डालो इन्हें।

बड़ी मुश्किल का सामना करते -

महाचाकाम वज्र को सोच रहे थे सुल्तान की निशाने -

कूद सकता था सुल्तानों के सिर पर -

धड़ाम

महाचाकाम वज्र कहां गया ?

महाराक्षस वज्र की फरारी का समाचार सुनते ही वज्रों के हौसले पस्त हो गए -

महाराक्षस वज्र रणभूमि में छोड़कर भाग गए।

पस्त हौसलों के साथ वे क्या लड़ते।

भागो!

शुंभासुर से बच निकलना अब क्या इतना आसान था।

अब नहीं बचने के हम। शोभेसुर असुर का साथ क्यों दिया हमने?

भाग चलो यहाँ से।

विजय हास करती शुंभासुर के -

शुंभासुर... जिन्दाबाद।

असुर शुंभासुर जिन्दाबाद।

असुर 'शुंभासुर अपने काल्पनिक कद में लौट आया -

नहीं। नहीं अग्नि जिन्दाबाद। अग्नाक्षी जिन्दाबाद।

नहीं अग्नि जिन्दाबाद। अग्नाक्षी जिन्दाबाद।

ठीक समय पर आए खूंखार सम्राट! आखिर बड़ी शक्ति के बल पर तुम विजय प्राप्त करने में सफल रहे।

खूंखार के मन में तूफान मच रहा था –

नहीं महाकुरूप पक्षक! बड़ी शक्ति की ये बहुत छोटी सी विजय है।

बड़ी शक्ति का भान नहीं है, अब विजय भी बड़ी हो।

क्या कहना चाहते हो खूंखार सम्राट?

बड़ी शक्ति हाथ में होने हुए अगर मैंने बड़ा काम न किया तो भाजन में सर्प काट-पिऊंगा पर।

झिझक गई महाकुरूप पक्षक की आवाज –

साफ साफ कहो खूंखार सम्राट?

साफ-साफ बात ये है महाकुरूप पक्षक कि अब मैं दुश्मनों का विजेता बनूंगा।

प्रभाका को बुलाओ महामुरु पक्षक। प्रभाका को अच्छा है मैं।
प्रभाका
हंसा उड़ गए थे महामुरु पक्षक के –
किन्तु सूरसार सम्राट। बड़ी शक्ति का दुरुपयोग सूरसार को तबाह करके रख देगा।
प्रभाका मद में चूर था सूरसार –
बड़ी शक्ति है मेरे पास। बड़ी शक्ति शक्तिशाली। शक्तिशाली के सामने कोई सामने मुझे मु भी नहीं सकता।
अपने निर्णय पर एक बार फिर विचार कर लो सूरसार सम्राट।
निर्णय हो चुका महामुरु। मुझे मेरे निर्णय से डिगाने का प्रयत्न मत करो।
अपने अंतिम सफर तक सूरसार के सम्राट का साथ देने के लिए प्रतिज्ञा-बद्ध हूं सूरसार सम्राट। प्रभाका से बुलाता हूं।
सूरसार का कवच भी चूर हो गया सूरसार का सूरसार।

धरती पर उन दिनों मचा था मकोड़ा राक्षसों का आतंक –

भोजन

भोजन

आऽऽऽ

मकोट के नेतृत्व में मकोड़ा राक्षसों ने तबाही मचा दी थी –

मोटा शिकार करने हा हा हा !

मकोड़ा राक्षसों के आतंक से पृथ्वी के कई राज्य त्र

मकोड़ा राज मकोट ने पृथ्वी पर प्रलय मचा रखी है !

कश्मीर जिस पर इस समय हमला हुआ है ! का पूरा जंगल ही खत्म हो गये हैं मकोड़ा राक्ष

पृथ्वी के कई राज्यों का 'पृथ्वी सम्मेलन' पिंजोर धाम में हो रहा था –

... जिसकी व्यवस्था एक शिक्षाप्रद व शक्तिशाली राज्य पिंजोरा के राजा हिंदोला देव ने की थी ...

मकोड़ा राक्षसों के प्रकोप से बचने के लिए हो हमने इस पृथ्वी सम्मेलन का प्रस्ताव आप लोगों के सम्मुख रखा था।

स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए जिन्हें आप लोगों ने सहर्ष स्वीकार भी कर लिया।

अब हम सब को एक जुट होकर इस समस्या का हल खोजना होगा।

बंचैन नगर का राजा सुन्दचैन सिंह -

मकोड़ा लक्षण सैकड़ों की संख्या मे आते हैं। और पूरे का पूरा नगर शुद्ध ही देर मे श्मशान बनाकर चले जाते है।

किन्तु इस समस्या का हल है क्या?

नागपति का राजा सांप सिंह -

हम और हमारी सेना उनके आगे कीड़े मकोड़ो का सा महत्व रखती है।

झाड़ नगर का राजा नाड़या -

न जाने कितने नगर बर्बाद हो चुके है।

धन देश का राजा धनेश स्वान -

न जाने कितने अभी और बर्बाद होंगे।

सूरजपुर का राजकुमार कृष्णकुमार –
महाराज! आपने अपने प्रश्नपत्र में यह भी लिखा था कि आपके पास उस समस्या का एक हल मौजूद है।
हम सब जानना चाहते हैं महाराज कि वह हल क्या है ?
वह हल है स्वयं महर्षि नृपनमुनी के पास।
सभी शिष्यों का केन्द्र बन गए महर्षी नृपनमुनी।
हे महर्षि नृपनमुनी! वह हल क्या है, जिसके द्वारा आप सामान्य अतिथियों को कृपाकर बनाते।
महर्षि नृपनमुनी के तेजस्वी मुखमण्डल पर खड़े थे पूर्णतया सम्भ्रान्त –
वह हल है
अग्निमंथन
अग्निमंथन ?
??
अग्निमंथन ?

महाराज सिंहोदरनाथ, आपको अग्निसंस्कार की व्यवस्था करनी होगी।
और इस संकट से रक्षा करने हेतु कोई उपाय सोचना होगा।
हम तैयार हैं
राजा सिंहोदर ने तैयारी करवाई अग्निसंस्कार की -
कैसा होगा ये अग्निसंस्कार?
ऐसे कौन से कर्म प्राप्त होंगे इस संकट से जो मरकर से रक्षा करेंगी पुत्री - पांचों की?
आखिर क्या है ये अग्निसंस्कार

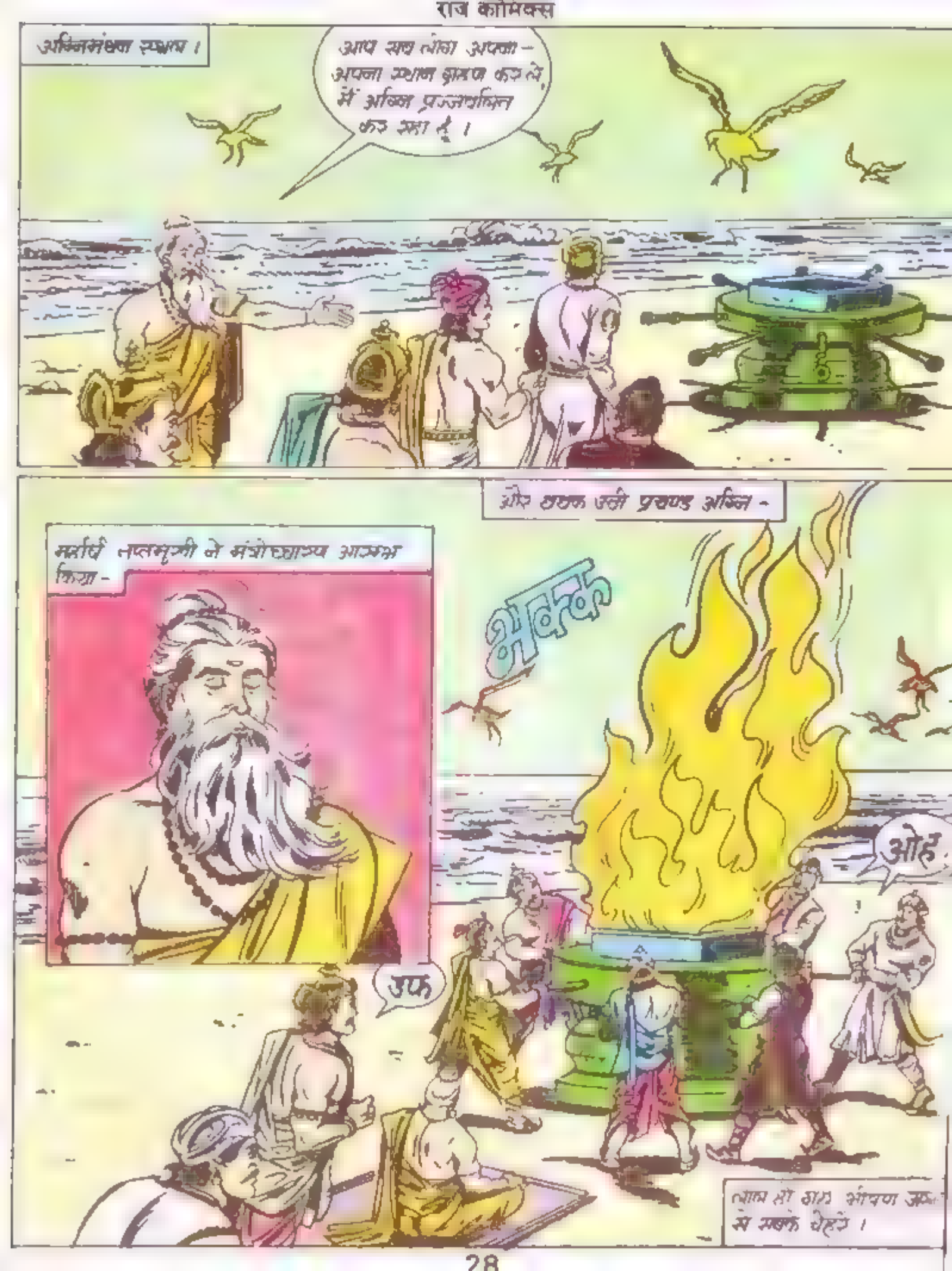
अग्निमंथन स्थान ।
आप सब लोग अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लें, मैं अग्नि प्रज्वलित कर रहा हूँ ।
और तभी उसी प्रचण्ड अग्नि -
भक्क
ऋषि नलमुनी ने मंत्रोच्चारण आरम्भ किया -
ओह
उफ
त्याग सो गए भीषण ज्वा से सबके चेहरे ।

अग्निमथन आरम्भ करो शत्रुजन।

आरम्भ हो गया अग्निमंथन -

तत्पश्चात् अग्नि प्रेषना।

महर्षि नग्नमुत्सी के मंत्रोच्चारण से की गई अग्नि स्तुति

उफ्, अग्नि की तपन इतना भयानक होता है।

अग्नि की भयंकर आकाश को छूने लगी-

न जाने क्या विनाशकारी और दिव्य शक्ति?

अचानक कड़क उठी बिजली

इन्द्र के साथ आए महर्षि नग्नमुत्सी के नेत्र-

ओह! अग्नि मंथन से अब प्रकट होगी दिव्य शक्तियां।

प्रकट हुई पहली अग्नि -
मैं हूँ, अग्नि !
मैं अजर-अमर हूँ। फलक काननां। मुझ पर कोई शस्त्रास्त्र असर नहीं करता।
लक्ष्मीश मजाक करने की भी अदत है मुझ। ही ही ही।
यह अग्नि कैसे करेगी संकोए की शिशाल मफाड़ा अंगा का मुकाबला ?
पुन फफफाई प्रचण्ड ज्वाला -
अग्निमंथन आरम्भ करो गजन।
ओह!
इस। कोन सी अग्नि निकलेगा गजन से।
पसीने से लथपथ हो गये जिस्म

प्रकट हुई अग्नि -
शुरू छप्पाक ही ही हा ।
शुरू एंटाल कहते हैं मुझे। मेरा जन्म ही है मंत्री अग्नि का यज्ञ।
इनकी अग्नियों का पता समय आने पर ही चलेगा।
कैसा विचित्र है इनका यज्ञ ?
मंथन जारी रखो यज्ञ ! अग्नियों का तूफान कैसा होगा इस अग्नि मंथन में ।
अग्नी की नख शुरू हो गये थके उस। लेकिन अग्निमंथन फिर भी जारी रहा -
कैसा होगा ये तूफान ?

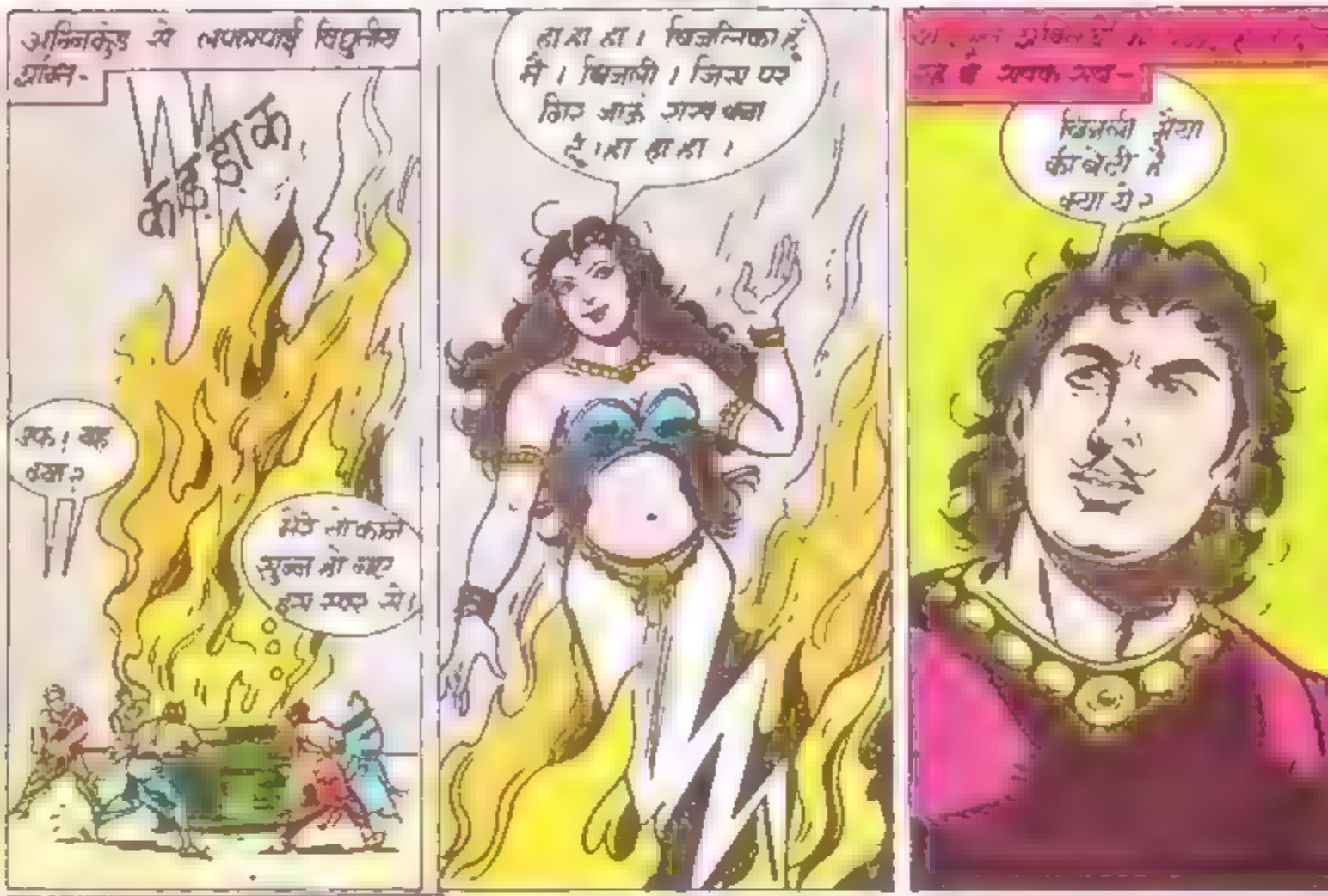
अग्निकुंड से लपलपाई विद्युतीय ज्वाला-
धक् धक्
अरे! यह क्या?
मेरे तो कानों सुन्न हो गए इस स्वर से।
हा हा हा। विजन्तिका हूँ मैं। विजयी। जिस पर गिर जाऊं उसका क्या है। हा हा हा।
विजयी सेना की बेटी है क्या ये?

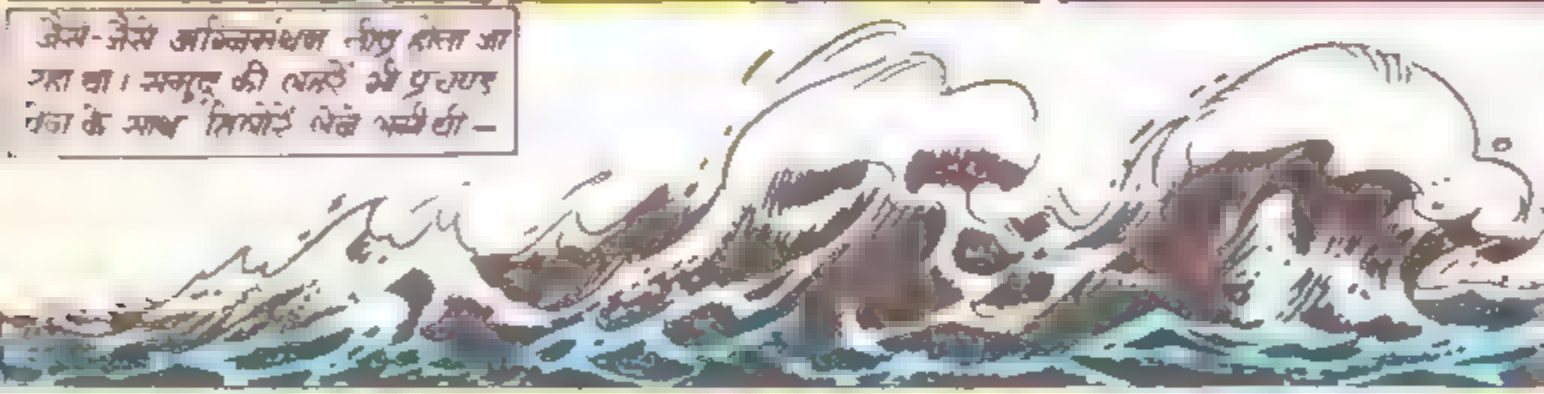
जैसे-जैसे अग्निमंथन तीव्र होता जा रहा था। समुद्र की लहरें भी प्रचण्ड वेग के साथ हिलोरें लेने लगी थीं—

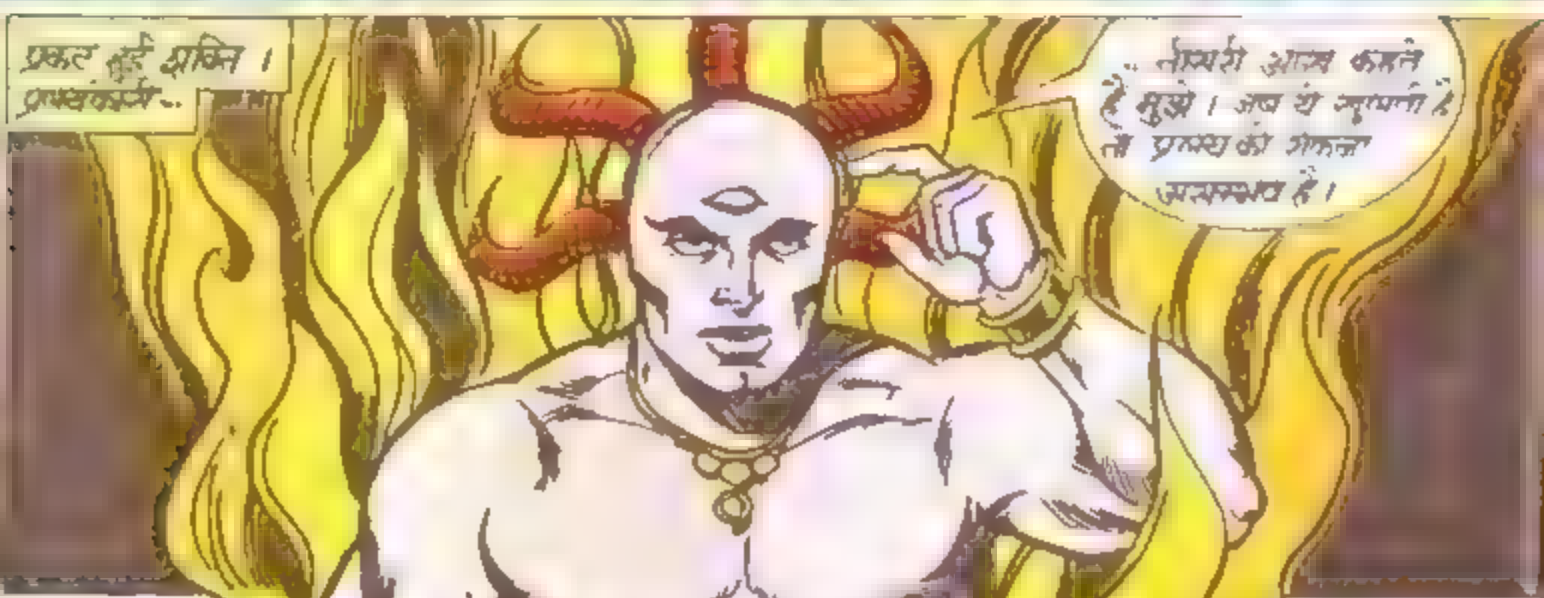
प्रकट हुई अग्नि। प्रलयंकारी...
...तीव्रता आज कहते हैं मुझे। जब ये जागती है तो प्रलय को रोकना असम्भव है।

प्रलयकारी नीचती आंख के बाद एक-एक करके प्रकट हुई नौ महाअग्नियां 'ओंग' -

अत्रि ऋषि की जय।
महर्षि तपस्वियों को आर्यों का प्रणाम।
आयुष्मान भवः।
तथा –
हे मान्य अतिथिगण! मुझसे क्या सेवा चाहते हैं आप?
हम तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहे थे आर्या।
मान्या अनसूया 'आर्या' के आश्रम में प्रविष्ट हो गई।

इसी के साथ महर्षि सप्तमुखी ने घोषणा की
अग्निमंथन का अदृश्य पुत्र हो चुका है। हे, महाभाग! अब कृपाकर आप मंथन बंद कर दें।
ओह!
इसी के साथ शुरू हुई अग्नि-अग्निमंथन की।

अग्निमंथन से गोजो ज्ञान को यह अग्नि प्राप्त हुई है हम गोजो करेगा संकट का सकट दूर।

ज्ञान विष्फोटक शक्तियों का स्वामी गोजो। संकट के बुरे दिन आ गए अब।

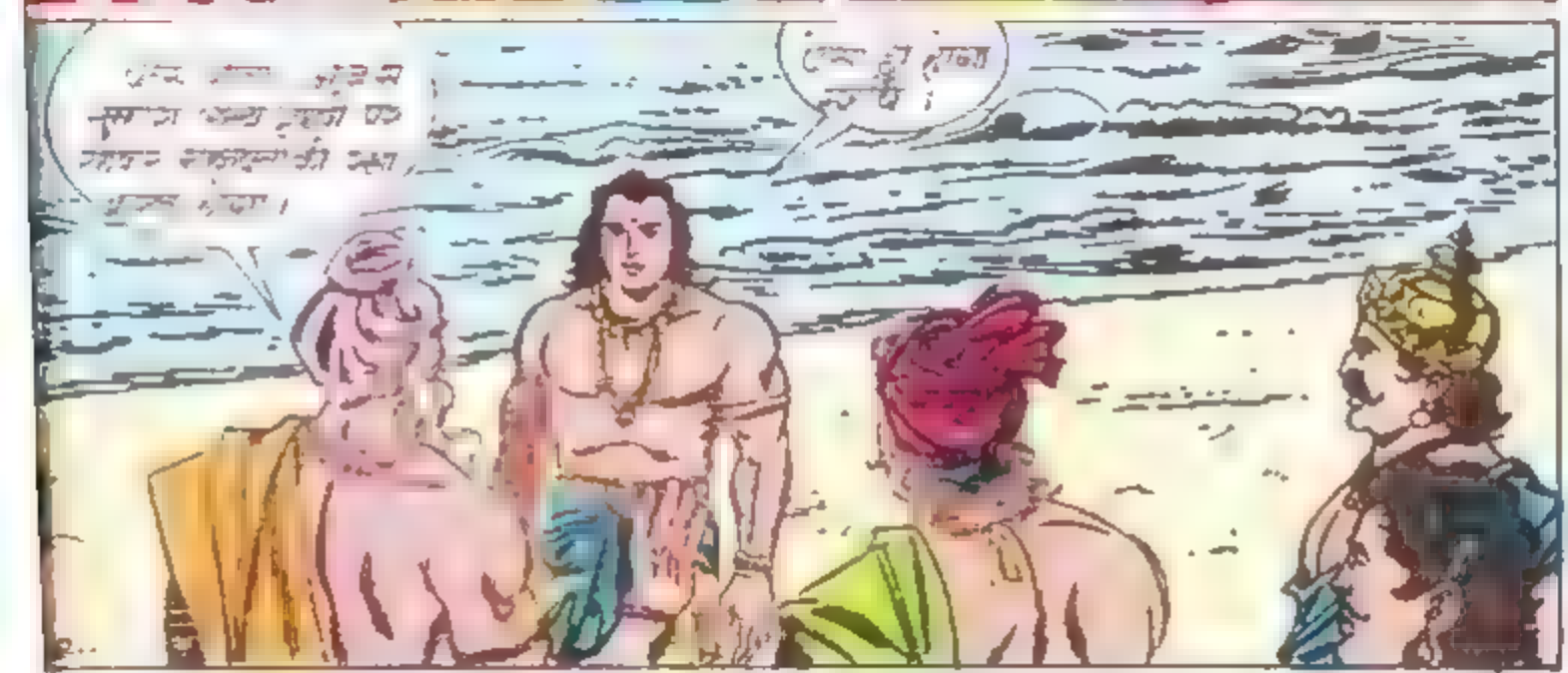
ऐसा ही होगा

फिर एक बार हुआ मकड़ा का आक्रमण मालवा पर। और इस बार शिकार था पिजारो !
भागो। मकड़ा राक्षस आया !
भोजन !
भोजन

किन्तु अब वहाँ भोजन सिपाही इतना भयानक था -
ओफ ! यह क्या -
मकड़ा

हत्या का यह नीच झोंका न यह अंक मकड़ा राक्षस -
ओफ

भोजन की ओर बढ़ते कदम अचानक ठिठक गए -
हत्या का नीच झोंका हमारे आशियानों को उड़ा लिए जा रहा है।

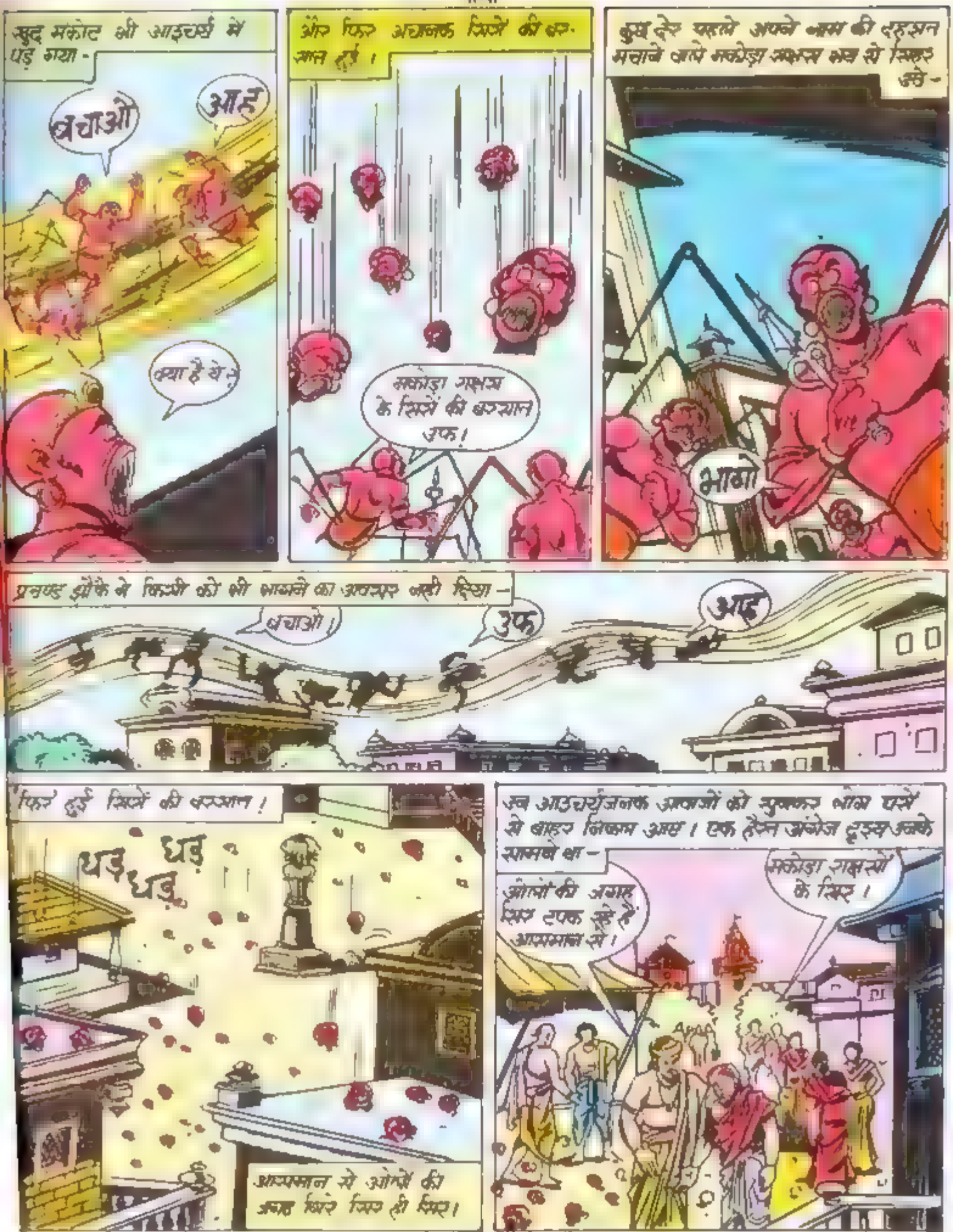
खुद मकोट भी आश्चर्य में पड़ गया -
बचाओ
आह
क्या है ये ?
और फिर अचानक सिरों की बरसात हुई ।
मकोड़ा राक्षस के सिरों की बरसात
उफ !
कुछ देर पहले अपने नाम की दहशत मचाने वाले मकोड़ा राक्षस भय से सिहर उठे -
भागो
प्रचण्ड धमाके ने किसी को भी भागने का अवसर नहीं दिया -
बचाओ !
उफ
आह
फिर हुई सिरों की बरसात !
धड़
धड़
धड़
आसमान से ओलों की जगह गिरे सिर ही सिर।
इस आश्चर्यजनक अवाजों को सुनकर लोग घरों से बाहर निकल आए । एक हैरत अंगेज दृश्य उनके सामने था -
ओलों की जगह सिर टपक रहे हैं आसमान से !
मकोड़ा राक्षसों के सिर !

यह चमत्कार कैसे हो गया ?

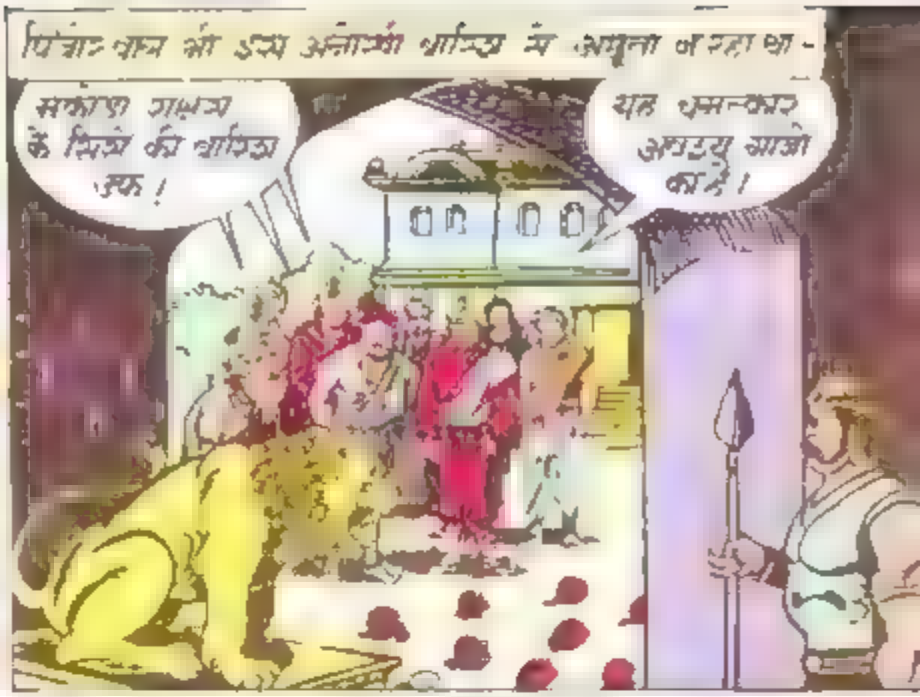
पिशाच राज भी इस अलौकिक शक्ति से अचंभित हो रहा था -
सकोट राक्षस के सिर की शक्ति थी !
यह चमत्कार अवश्य भाजो का है !

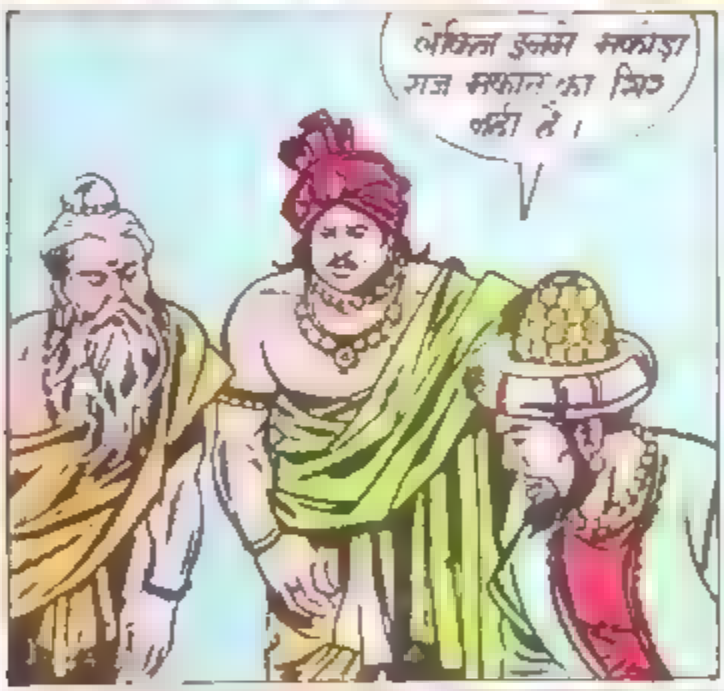
लेकिन इसमें सकोट राज मशाल का सिर नहीं है !

सकोट के सिर पर भी चमक रही थी नंगी तलवार -
सकोट ! तेरा सिर भी लेकर जाऊँगा
इतना आसान नहीं होगा भाजो ! इतना आसान न समझ

नीच की नजर झपट पड़ा सकोट भाजो पर -

ये असल तेरा सिर धड़ से गुदा कर देगा !
ओह ! बड़ी तेजी दिखाई सकोट ! शैतान !

मकोट की सीत्य भी लंका के घुटने की चोट से तिल-मिला उठा अंजा -

उफ़! घुटने की ये चोट बर्दाश्त के बाहर पड़ी है।

मकोट! मैं अहं नो मरुत वृं तुझे सीधी तरह, पर देखता हूँ मेरे में कितनी ताकत है।

सम्भल अंजा।

घनीय कलाबाजियां खा बचा मकोट।

फिर फिर -

और अगर फिर मकोट का वह अस्त्र भी -

अंजा

अंजा

अंजा

मुश्किलों का खड़ा था भोजो –

बोलो मंकोट! क्या हुक्म करूं तेरा?

भोजो! तुम जीत में हो

मंकोट के नियमानुसार पराजित की जिन्दगी पर विजयी का अधिकार होता है।

तुम जो चाहो मेरे साथ व्यवहार कर सकते हो?

चाहो तो मेरा सिर भी काट सकते हो।

इसके दिमाग में कोई योजना नहीं है। सच ही यह पराजय की ग्लानि से क्षुब्ध है।

एक आश्चर्यजनक निर्णय किया भोजो ने –

मकोड़ा राज मंकोट! मैं तुम्हें मारूंगा नहीं, बल्कि आज से तुम भोजो के दोस्त कहलाओ। यह लो संभालो, अपना अस्त्र।

सुझे मंजूर है भोजो!

मंकोट बनगया भोजो का बहन

बाजा को अपनी पीठ पर बिठाकर पिताश्री को और बड़ा सकट –
आह ! अतमुनि अवाजे आशिर्वाद सेवा सफल मेरे पिता !
इस बचन को अपनी अंतिम सास तक भी निभाना होगा मुझे !
इधर भी यहाँ अजाज का डोनाल अजाज पृथ्वी पर, धरती का सिरेना बनने को !
बड़ी शक्ति बड़ा अपना !
अबसे पहले धरती पर मुझे अपने सिर छिपाने की जगह ढूंढनी है !
जो कि मेरे लिए कोई मुश्किल काम नहीं ! यही बुरा मग लिलाज स्थान बनेगी ! यच सूच एक पिशाच भी है ये गजाद !
हो हो हो हो
प्रभाका ! अपना कार्य आरम्भ करो !

मौत को भी कंपकंपा देने वाली शक्ति का प्रयोग-
आपका अंकल मुझ तक पहुंच गया है प्रद्युम्न। अब आपको और पृथ्वी को न बच सकेगा ये नृ-राक्षसराज। पृथ्वी पर आतंक आंतकित करने से पहले मैं उसका संहार करूंगा। यह बजने वाला आपके सामने मुझे के दो अंगुलों का। हा हा हा
प्रद्युम्न चिल्लाया-

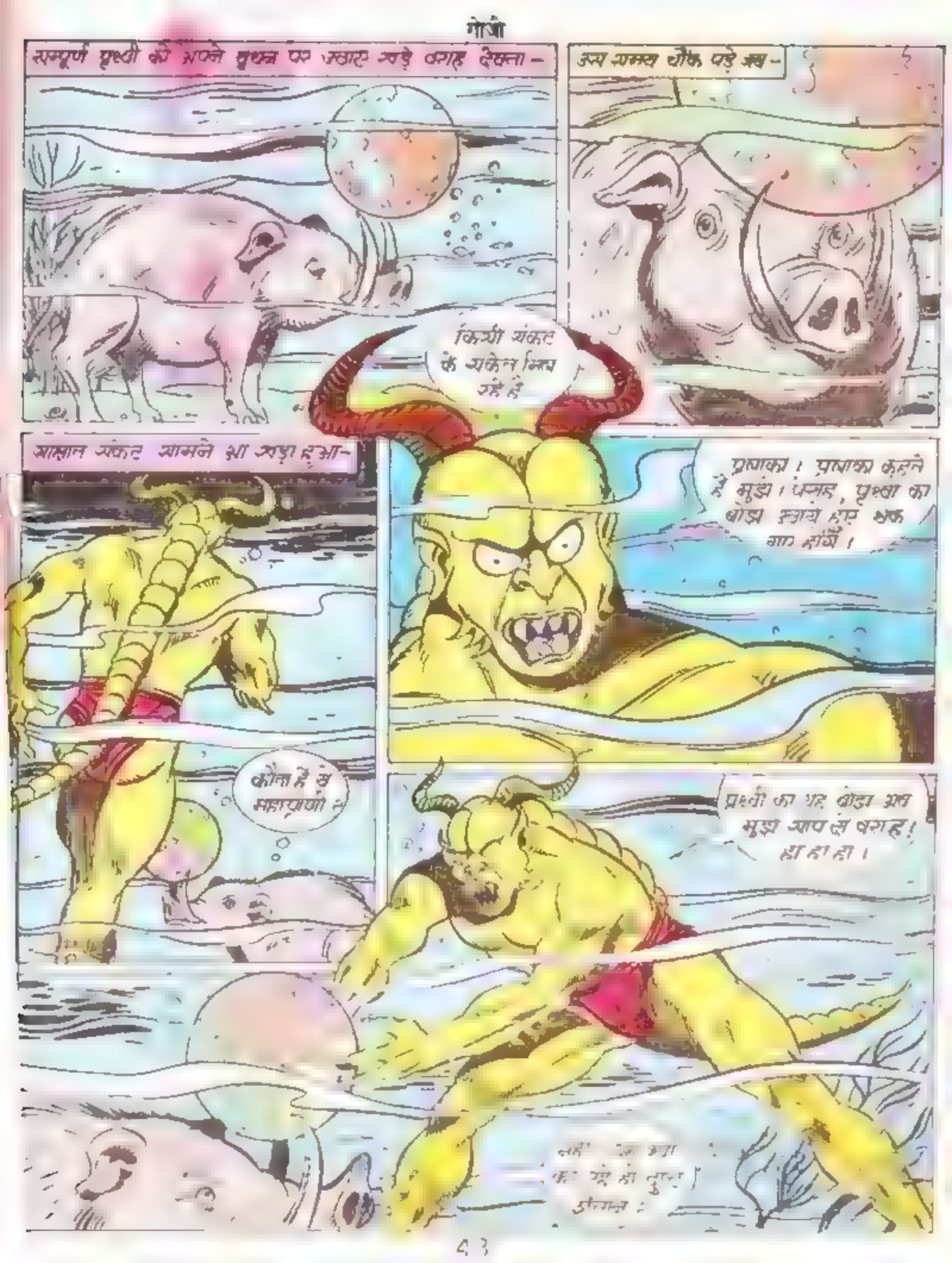
सम्पूर्ण पृथ्वी को अपने पृष्ठ पर अकेले खड़े वराह देखता –
उस समय चौंक पड़े अब –
किसी संकट के संकेत मिल रहे हैं
प्रभाका ! प्रभाका कहते हैं मुझे । अच्छा, पृथ्वी का बोझ अपने कंधे पर रख लो भाग जाओ !
साक्षात संकट सामने आ खड़ा हुआ –
कौन है ये महाप्राणी ?
पृथ्वी का यह बोझ अब मुझ आप से वराह ! हा हा हा ।

इसी के साथ भूचाल सा आ गया पृथ्वी पर –

दुष्टदमन

आह!

उफ

थोड़ा विश्राम कर लो वराह! हा हा हा।

कई इमारतें धड़धड़ा कर भूमि से आ लगीं।

इधर पृथ्वी के नीचे घिड़वे वाली थी जंग –

प्रचेता! प्रकृति के कार्यों में हस्तक्षेप करना है दुष्कर! अब तुझे शोभित नहीं पद्मा है।

मरा गए मारने वाले। हा हा हा हा।

चेतित हो उठे ब्रह्म देवता –

अरे ये अब अब क्या सुनने को मिला प्रचेता।

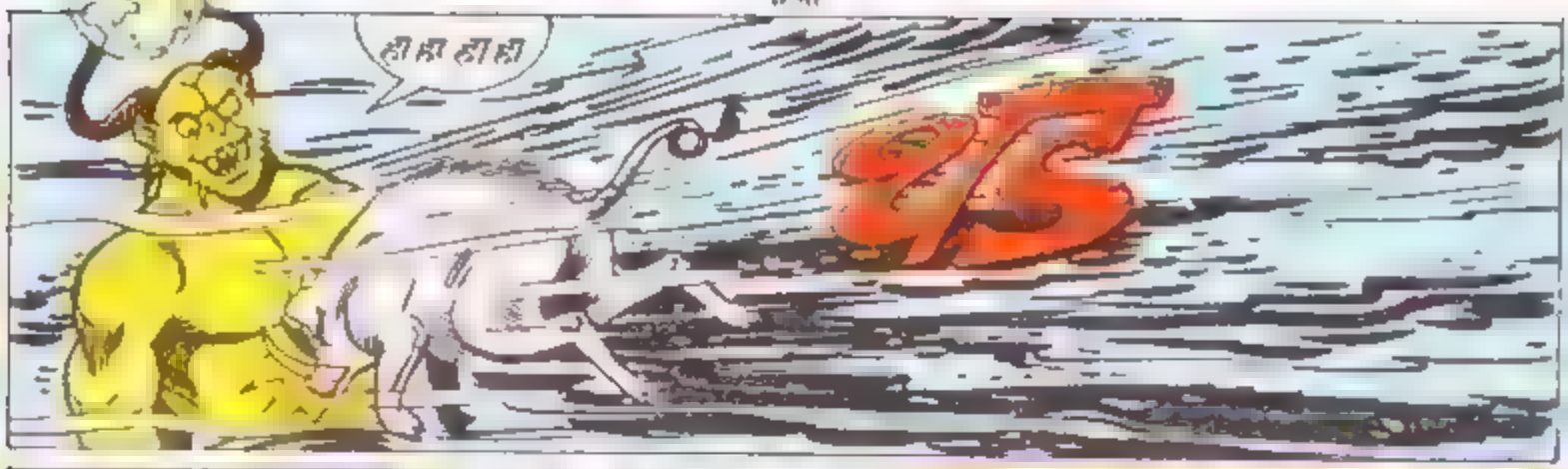
हा हा हा हा
धड

घर आकर अपने सींगों पर नई धार लगाऊंगा उसके टुकड़े टुकड़े कर दूंगा। दुष्टों का नाश करने के लिए ही तो मेरा जन्म हुआ है।

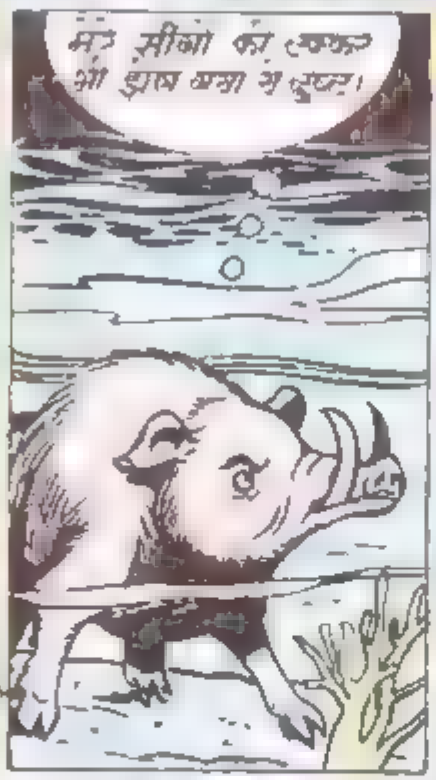
मेरे सींगों का एक वार भी झेल नहीं पाएगा वह दुष्ट।

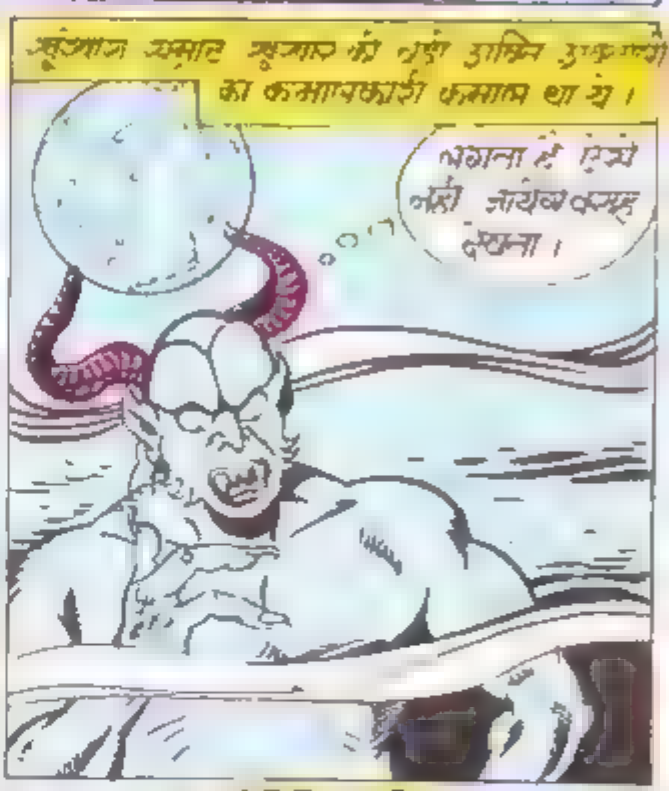
सूर्यास्त उसके शुभारंभ की नई अग्नि उत्पन्न करने का कमाल था ये।
भगवान ने ऐसे नहीं जीवों को बनाया।

अब तुम्हें स्वामी की नई अग्नि का चमत्कार दिखाता हूं।

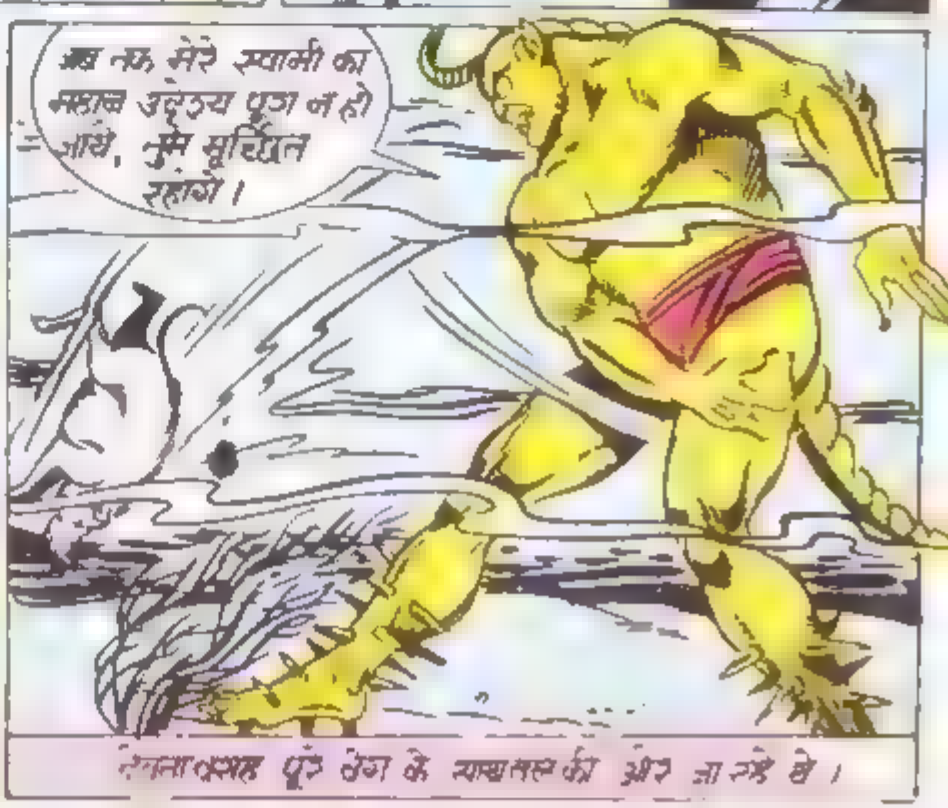
अब तक मेरे स्वामी का महान उद्देश्य पूरा न हो जाये, तुम्हें सुरक्षित रहना है।
रेवन्त अपने पूरे वेग के साथ तल की ओर आ रहे थे।

पृथ्वी सम्मेलन में भाग लेने आए अन्य ग्रह के राजा-महाराजा –
हा हा हा हा ! अच्छा हुआ जो आप सब आज एक ही जगह पर मिल गए।
आप सब अपने-अपने नाज सुलझाकर मेरे कदमों पर डाल दें। अन्यथा भुकम्प का सामना पुनः करना पड़ेगा क्योंकि
पृथ्वी अब हमारे अधिकार में है। हा हा हा !
श्वामी का श्वर। भुकम्प का एक झटका और देना होगा मुझे।
बुरी तरह घबराकर सिर पर पैर रखकर भाग –

अकस्मात एक झटका सफ़ेदों आने से लगता है। हा हा हा। क्या सोचा तुम सबने?
अगर तुम लोग कुछ करना चाहते हो तो मैं भी तैयार हूँ। यही प्रक्रिया इसलोगों के लड़ने सुरक्षा अंतरिक्ष की तुलनात्मे मजबूत के लिए काफ़ी है। हा हा हा।
सभी के सम्मिलन में कोई व्यक्ति एक भय-
कदाचित मात्र इसका सामना कर सकता है। और वहां इस समय मणिपि के साथ उसके अन्दर में है।
राजा लिंगोदेव-
जब एक दोनों के आ जाए। अंजनाचक्र नगरियों में कोई नहीं होगा।
इस तरह मन ही मन कुछ सोचकर कहते हैं लिंगोदेव-
सुरक्षा। हम तैयार हैं। हमें पर और ज्यादा नहीं सोचना चाहिए।
???
यहाँ मेरा राज्य है और मेरा शासनकाल शुरू।

भूकम्प से हिल उठा था महर्षि नचकुन्जी का आश्रम भी-

उफ़! यह भूकम्प कैसा था?

उपकार पक्षीराज!

ओजो ने अपनी एक अंकित का आदेश दिया।

आकाश में उड़ा-

संसार का कोई हिंस्र पशु मेरी भीषण किलाड़ा से छूट कर नहीं सकता!

सूचना मिली आकाश की दिशाओं से-

सूंस्वाग समाट सूंस्वार और बड़ी आंधन अकलांखी!

और प्रभाका भी नहीं छिप सका-

प्रभाका! ओह! यह क्या है! ओजो को शीघ्र ही बताना होगा।

सुनकर कनपटियां सुर्ख हो उठीं ओजो की-

उस दैत्यान का अन्त आ गया है!

आकाश शक्ति रूपा वायी वापस गोजो के जिस्म में –
महर्षि ! मुझे आज्ञा दें महर्षि ! उन असुरों का अंत करने की आज्ञा दें मुझे।
अवश्य पुत्र! इसीलिए ही तो जन्म हुआ है तुम्हारा।
मंकोल ! तुम्हें इन्हें समाप्त कुछ करना है।
मुझे केवल तुम्हारी आज्ञा चाहिए गोजो।
मंकोल के जिस्म से निकली चिपचिपे तरल पदार्थ की वह बेहद मजबूत जंजीरें जो रस्सी -
इन रस्सियों की मदद से कहीं भी पलक झपकते पहुंच सकता हूं।
गोजो को घिर उड़ गया मंकोल–
मंकोल ! सर्व प्रथम मैं पृथ्वी को उस दुष्ट प्राणी की कैद से स्वतंत्र कराना चाहता हूं।
मैं तुम्हें वहीं ले जाता हूं गोजो।

समुद्र का सीना चीरकर वरुण में जा पहुंचा मंकोर -

गोलो! परशु देवता सुरक्षित पड़े हैं।

उन्हें होश में लाना होगा मंकोर। क्योंकि प्रलयंकारी से पृथ्वी को स्वतंत्र कराने की पृथ्वी को उनका सहारा चाहिए।

उसके देवता के निकट आ कर मंकोर की पीठ से नीचे उतरा गोलो -

तुम्हारे सूर्यास्त दूर करने के लिए तांडक किरणें तुम्हारे जिस्म में प्रवेश करनी होंगी।

गोलो की नीली आंखों से निकली तांडक किरणें -

अगले ही पल उस वैद्य देवता कराह -

तुम कौन हो तुम ?

गोलो। अग्नि - मंथन के फलस्वरूप मेरा जन्म मानवता की रक्षा के लिए हुआ है।

किन्तु प्रलयंकारी मानवता को कुचलना चाहता है।

उसका अंत अब दूर नहीं है वैद्य देवता।

मैं उसका अंत करने जा रहा हूं। उसकी मौत के बाद आप पृथ्वी को पुनः सहारा दीजिएगा।

प्रभाका की मौत बना
गोजो जा पहुचा उसके
सामने –
दुष्ट प्रभाका !
पृथ्वी को वराह देवता
के सुपुर्द करदे और
मुझसे युद्ध कर !
तू कौन है भाई ?
गोजो, तेरे
सन्तु !
प्रभाका ने पृथ्वी को वराह के मस्तक पर लिटा दिया –
ले भाई वराह देवता,
कुछ देर के लिए पृथ्वी
को संभाल । मै इस
इच्छकी तबीयत
ठीक कर दूं ।
तेरा मेरा युद्ध
पृथ्वी पर होगा
प्रलयंकर !
मुझे कोई
एतराज नहीं
प्रभो ।
पृथ्वी पर सूनो मंच आरम्भ
होने वाला था –
ले भाई गोजो । पृथ्वी
पर आ पहुँचे हम । मंच
क्या खिलाड़ लगा तू !
प्रभाका
युद्ध कर ।
मैं मुस्कान
युद्ध का निर्णायक
चुन लाता हूं ।

भीम !
भीम ! प्रभाकर को पहाड़ा पार कराया, लेकिन युद्ध करना है!
धड़ाक
धरती में अमृत धारा है न मुंडे। मगर दूसरा पार मुंडा धरती में से बचा रहा।
है ? बचा गया। पहाड़ा पार बचा गया तू।
भीम ने फुरसत अग्नि कर -
मुंडाका, बाहर निकलो। तुम्हारा परीक्षण का समय है।
मुंडाका प्रभाकर में अपनी शक्ति का धोखा मचता गया-
धड़ाक

जुरोका के अप्रत्याशित वार के कारण प्रभाकर को अपना पाव गंवा देना पड़ा –
उफ़। मच्छर ने बहुत जोर का डंक मारा है।
कथा नमः प्रभाकर।
जुरोका इसका प्रहार करके अपना समय था गोजो में।
पहला वार नहीं करेगा प्रभाकर।
प्रभाकर ने उसे मुट्ठी में दबोचने का असफल प्रयत्न किया था –
पहला वार पड़ गया तो तू अगले जन्म तक भी नहीं उठ पायेगा समझा से।
ओह! शाकाम, शाकाम! इसको पकड़ में बचाना।
शाकाम अग्नि में तपे गोजो को –
ओह। बहुत अच्छा आकाम।
ओ? फिर निकल गया। कमबख्त कोई नानुगोजो ही नहीं मालूम।
गोजो लड़ने के पूरे मूड में था –
महाराज। अब प्रभाकर को अपनी शक्ति का एक नमूना दिखाऊंगा।

संहारक ओजो के जिस्म से बाहर आ गया –
पत्थर के हाथ, पत्थर का शरीर, पत्थर का दिल !
युद्ध में कभी पीछे मुड़कर मत देखियो प्रभाका ! ही ही ही !
मैं हूं संहारक
प्रभाका ! पीछे देखो तुम्हारे स्वामी । महान सूरबास प्रभाए सूरबास पधारे हैं ।
स्वामी ?
पलट गया प्रभाका, और इसी के साथ प्रभाका की खोपड़ी पर पड़ा संहारक का प्रचण्ड घूंसा
संहारक अपना बुरा ओजो के जिस्म में –
अबकी नहीं बचेगा ओजो, मेरे वार से ।
इसी के साथ निर्णायक लड़ा शुरू हो गया –
प्रभाका ! तुने अभी तक पहला वार ही नहीं किया तुझे तो अब तक मर जाना चाहिए ।

अब मैं तुझे और वर करने का अवसर नहीं दूंगा शैतान!
विजयिका! मुझे अपनी शक्ति दो।
धर्ज उठा आजका विजयिका की शक्ति से
विजयिका शक्ति है ये। जिसपर गिर जाए साक में अदृश्य जाए।
प्रभाका राज्य के एक बड़े पहाड़ में अदृश्य गया -
च च च! बेचारा पहाड़वार कटने का श्रवण मिए हुए ही अस्त सिधार गया।

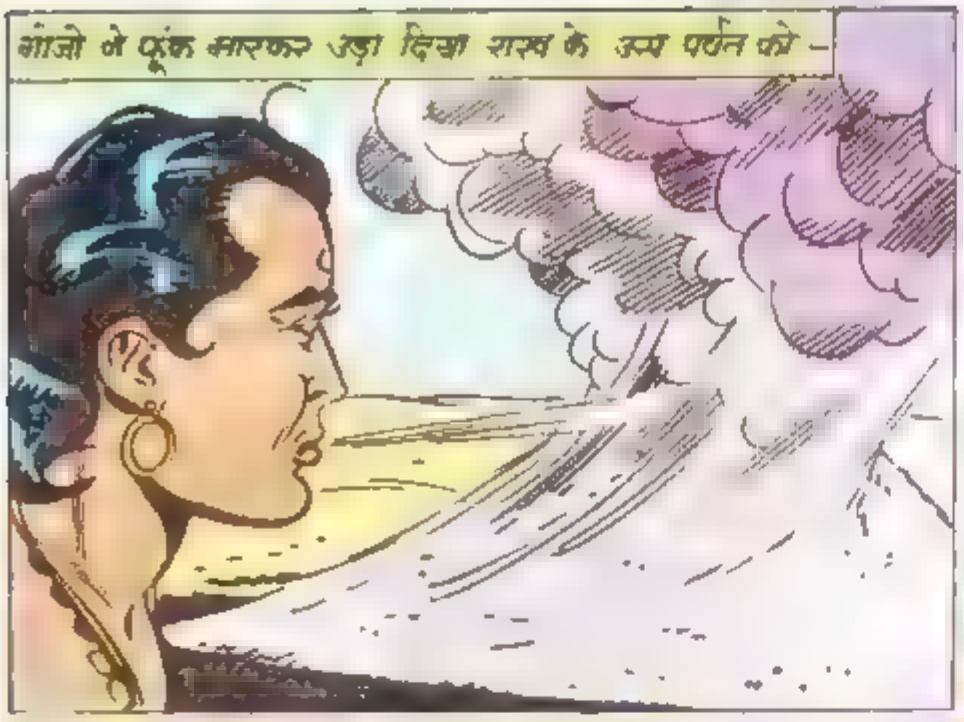
योद्धा ने फूंक मारकर उड़ा दिया रास्ते के ऊपर पर्वत को –

फिर –
अब खूंखार का अंत करना है मकोट, चलो।

पृथ्वी का विदेना जंगल निकाला खूंखार चौंक पड़ा।
मेरी बायीं आंख फड़क रही है। प्रलाका से मेरा मानसिक स्पर्श भी टूट गया है।

मानसिक दर्पण पर प्रलाका को देखता हूं।

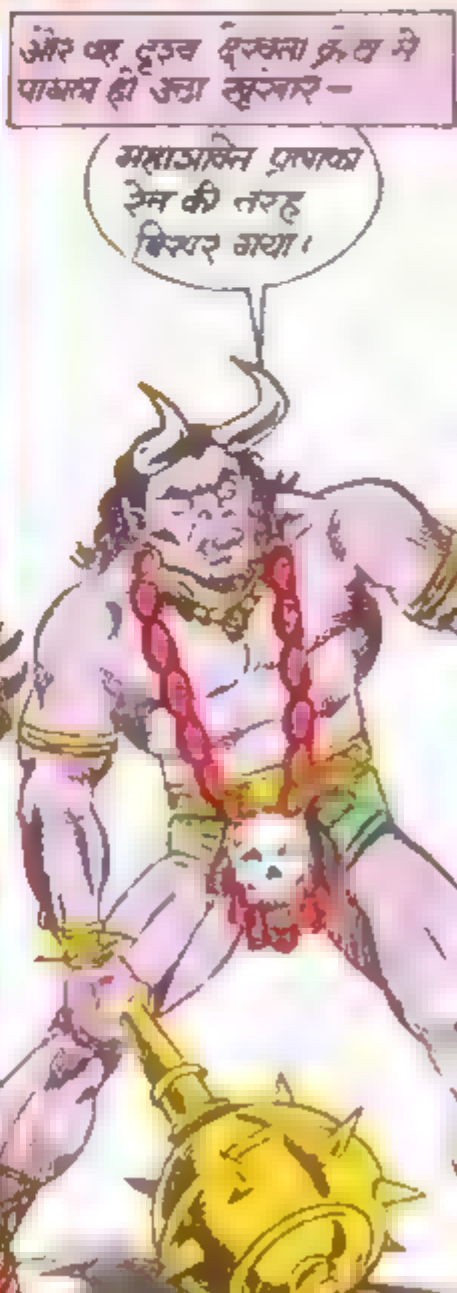
और यह दृश्य देखता क्रोध से पागल हो उठा खूंखार –
महाअग्नि प्रलाका रेत की तरह बिखर गया।

उसको शत्रु के लिये जिन्दगी है मकड़ी जाल्मय की पांव पर विनाशकाल जैसी

हां, सुंदरता जमाद सुरेखा। प्रलय के बाद अब तू भी नहीं बचेगा।

मानवता के प्रत्येक दुश्मन का दुश्मन हूं मैं।

गोरो का अभिशापित था वह—

हुंहूंहूं

ओ शांकिन। हाहाहा अब तू मेरे हाथों नहीं बच सकेगा प्रलय के बाद

उफ्फ

शूंबरा ने उछाली वह गदा -
हा हा हा ! इस गदा से नहीं बच सो धूम्रनी हो जाओगे ।
इस गदा से मुझे धूम्रनी करना बहुत था शूंबरा गदाए
जोजो ने दी शक्ति को आवाज -
शुरुआत ! अपने मुक्के की शक्ति का चमत्कार दिखाओ ।
हाँ आओ जोजो !
शुरुआत का मुक्का ही है शक्ति का राज ।
अंजाने - गरीब रूप में परिवर्तित हो गया शुरुआत -
शुरुआत समाप्त, बचा मेरा प्यार ।
शुरुआत के इस प्रहार से टकराकर गदा गदा भी कंकड़ों में बदल जाती, किन्तु -
हू हू हू !
उफ ! इस पर तो कोई असर नहीं हुआ ।
शुरुआत समाप्त जोजो के जिस्म में

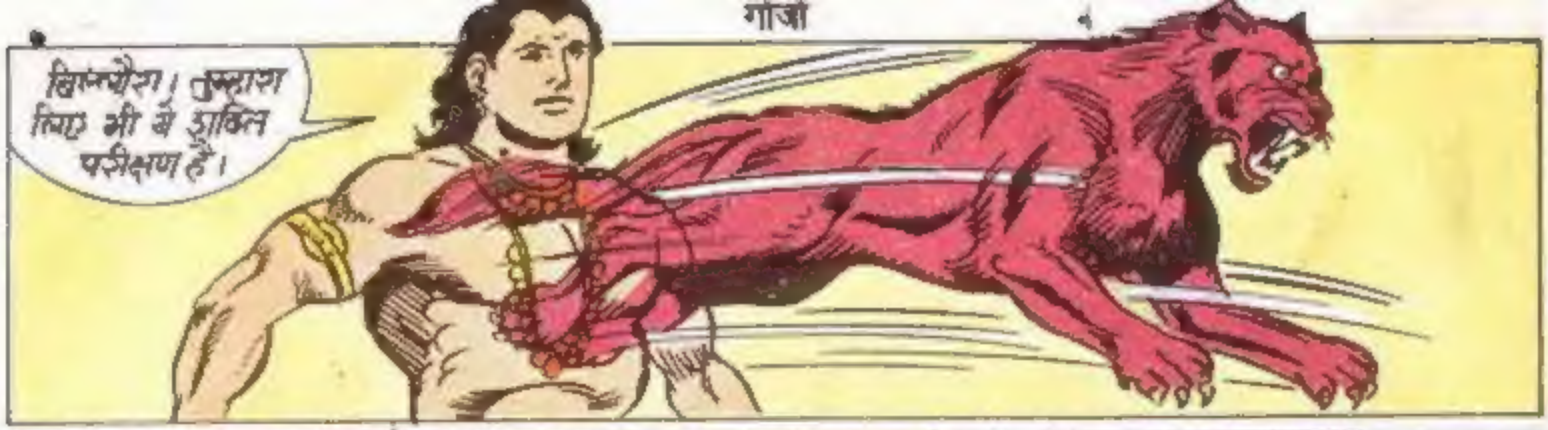
शिल्पौरा। तुम्हारा लिए भी ये शक्ति परीक्षण है।

भूखा की तरह खुश गया शिल्पौरा का मुंह -
शिल्पौरा अपने दुश्मन की एक हड्डी तक सलामत नहीं छोड़ता।

इधर खूंखार भी भयानक ठहाका लगाकर परिवर्तित हो गया विशाल रूप में
हा हा हा। बड़ी शक्ति शक्तोपी।

शिल्पौरा के लिए उसे निगलना असम्भव था -
हा हा हा। मेरी साथ को ही खेद कर दिया शिल्पौरा।
शिल्पौरा भी समा गया गोजो के जिस्म में

और इसी के साथ चौंक पड़ा गोजो -
उफ। मैं इसकी बड़ी शक्ति शक्तोपी को तो खो ही बैठा था। मेरी सब शक्तियां इसकी बड़ी शक्ति के कारण विफल हो रही हैं।
शाकाल। बाहर आओ। शक्तोपी तुम ही खा सकते हो।

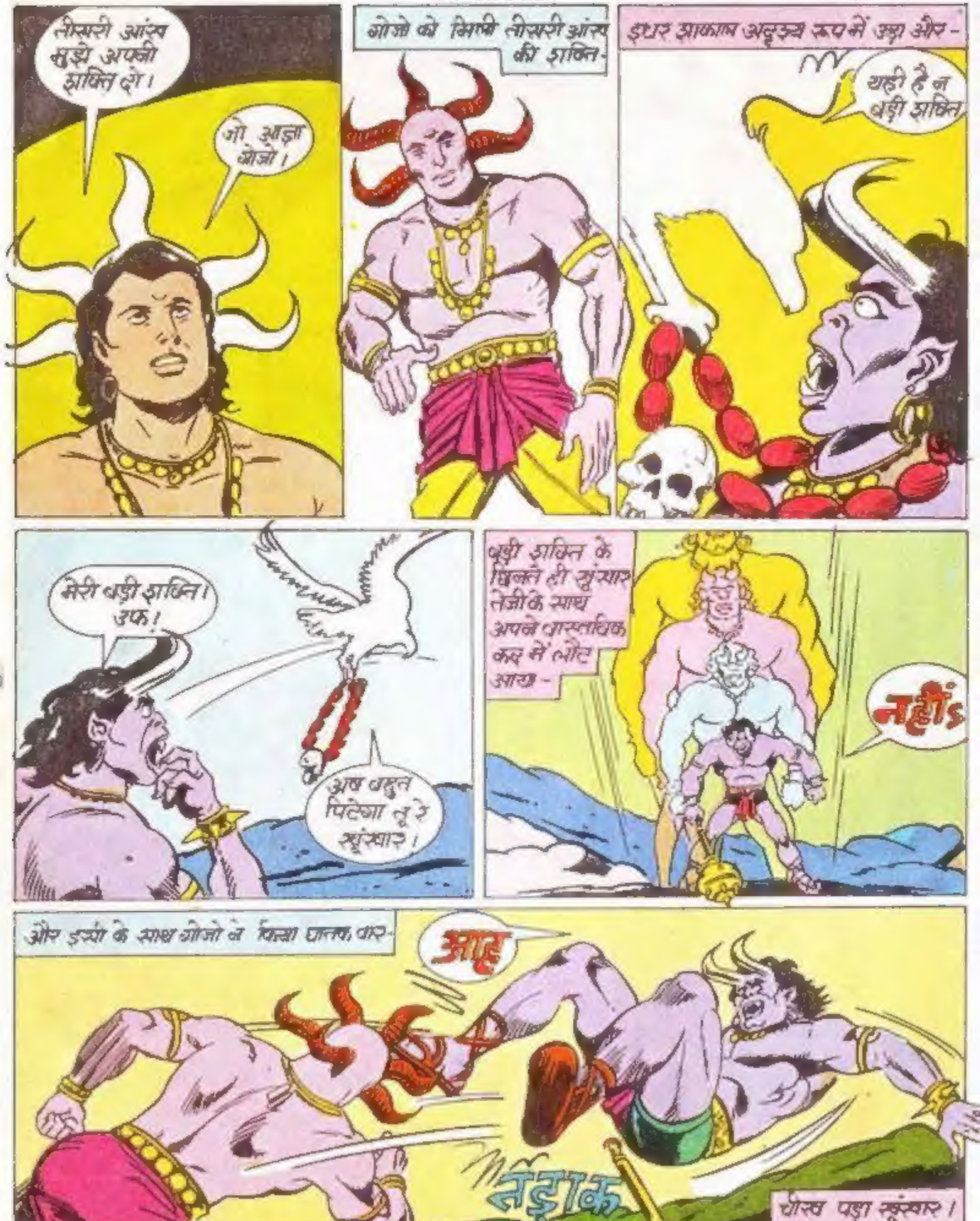
तीसरी आंख मुझे अपनी शक्ति दो।
जो आज्ञा भोजो।
भोजो को मिली तीसरी आंख की शक्ति-
इधर आकाश अदृश्य रूप में उड़ा और -
यही है न बड़ी शक्ति
मेरी बड़ी शक्ति। उफ!
अब बहुत पिटेगा तू रे सूंसार।
बड़ी शक्ति के छिनते ही सूंसार तेजी के साथ अपने वास्तविक रूप में लौट आया -
नहीं
और इसी के साथ भोजो ने फिर छलांग मार-
आह
तड़ाक
धीरे पड़ा सूंसार।

पागल सा हुआ खूंखार अचानक गदा लेकर टूट पड़ा गोजो पर –

तुझे नहीं छोड़ूंगा गोजो !

तीखरी आंख के बाद अब–

संहारक ! मुझे अपनी शक्ति दो !

खूंखार की गदा हो गई थी स्वांय-स्वांय –

कड़ाके

यह कमाल था संहारक शक्ति का ।

संहारक के पड़ोचात–

चित्तौग ! अपनी शक्ति दो !

पिशाच जबड़े खूंखार को पटकने के लिए खुल गए

खूंखार का पूरा सिर समा गया गोजो के जबड़े में –

नहीं

पूरा ही निगल गया ओजो खूंखार को -

पर दरअसल वही थी ओजो की विलक्षण शक्ति ।

और इस प्रकार समाप्त हो गया खूंखार और खूंखार का आतंक ।

धन्यवाद मातो शक्तियो ।

खूंखार के साथ ही समाप्त हो गया वह संकट भी, जिसमें पूरी मानवता खतरे में पड़ गई थी । ओजो ने वही शक्ति शक्तोली को महर्षि का शीश दिया ।

वही शक्ति किसी भी दिन ऐसा ही गम्भीर संकट पुनः उत्पन्न कर सकती है । अतः इसे मैं ऐसे तिलिस्म में बंद करूंगा, जहां तक पहुंचना किसी के बस की बात न हो ।

और जब महर्षि ने पृथ्वी सम्मेलन के सभी राजा-महाराजाओं को यह सुखद खबर दी -

वाह! ओजो के रहते अब मानवता पर कोई संकट नहीं मंडरायेगा ।

इधर ओजो -

आकाश! आज से तुम्हें संसार के प्रत्येक हिस्से पर निगाह रखनी है। मानवता का कोई दुश्मन तुम्हारी निगाहों से बचने न पाए ।

ऐसा ही होगा ओजो

चित्रकथा के सभी नये अवश्य लिखें
संजय गुप्त
16/3, दीवान
दिल्ली - 6

समाप्त